श्रीरामनवमी-व्रत-विधि एवं पूजन-विधि

(लेखक—पं० श्रीलक्ष्मीनारायणजी शुक्ल, न्यायवागीश, भट्टाचार्य)

चैत्रशुक्ला नवमीको 'रामनवमी'का व्रत होता है। यह व्रत मध्याह्नव्यापिनी दशमीविद्धा नवमीको करना चाहिये। अगस्त्यसंहितामें कहा गया है कि यदि चैत्रशुक्ला नवमी पुनर्वसु नक्षत्रसे युक्त हो और वही मध्याह्नके समय रहे तो महान् पुण्यदायिनी होती है। अष्टमीविद्धा नवमी विष्णुभक्तोंको छोड़ देनी चाहिये। वे नवमीमें व्रत तथा दशमीमें पारणा करें। चैत्रमासकी नवमीके दिन स्वयं श्रीहरिका रामावतार हुआ। वह पुनर्वसु नक्षत्रसे संयुक्त नवमी तिथि सब कामनाओंको पूर्ण करनेवाली है। जो रामनवमीका व्रत करता है, उसके अनेकजन्मार्जित पापोंकी राशि भस्मीभूत हो जाती है और उसे भगवान् विष्णुका परमपद प्राप्त होता है। श्रीरामनवमी-व्रतसे भुक्ति एवं मुक्ति दोनोंकी ही सिद्धि होती है। इस उत्तम व्रतको करके वह सर्वत्र पूज्य होता है।

श्रीरामनवमीके दिन प्रातःकाल नित्यकर्मसे निवृत्त होकर अपने घरके उत्तर भागमें एक सुन्दर मण्डप बना ले। मण्डपके पूर्वद्वारपर शङ्ख, चक्र तथा श्रीहनुमान्‌जीकी स्थापना करे (अर्थात् चित्र बना ले); दक्षिण द्वारपर बाण, शार्ङ्गधनुष तथा श्रीगरुडजीकी, पश्चिमद्वारपर गदा, खड्ग और श्रीअङ्गदजीकी तथा उत्तरद्वारपर पद्म, स्वस्तिक तथा श्रीनील-जीकी स्थापना करे। बीचमें चार हाथके विस्तारकी वेदिका होनी चाहिये, जिसमें सुन्दर वितान एवं सुन्दर तोरण लगे हों।

इस प्रकार तैयार किये गये मण्डपके मध्यमें परिकरों-सहित भगवान् श्रीसीतारामको प्रतिष्ठित करनेकी मुख्यतया दो विधियाँ हैं। प्रथम विधि यह है कि मण्डपके मध्यमें अष्टदल-कमल बनाकर केन्द्रमें श्रीसीताराम एवं लक्ष्मणजीको स्थापित करे।

केन्द्रके पूर्वस्थित दलमें श्रीदशरथजी, दक्षिण-पूर्वके दलमें श्रीकौसल्याम्बा, दक्षिण दलमें श्रीकैकेयी अम्बा, दक्षिण-पश्चिमके दलमें श्रीसुमित्राम्बा, पश्चिम दलमें श्रीभरतजी, पश्चिमोत्तर दलमें श्रीशत्रुघ्नजी, उत्तर दलमें श्रीसुग्रीवजी तथा पूर्वोत्तर दलमें श्रीहनुमान्‌जीको स्थापित करे। दूसरी विधि यह है कि श्रीसीता-राम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ या चित्रपट बीचमें स्थापित करके श्रीदशरथजी, श्रीकौसल्याजी, श्रीकैकेयीजी तथा श्रीसुमित्राजीको एक ओर और श्रीभरतजी, श्रीशत्रुघ्नजी, श्रीसुग्रीवजी तथा श्रीहनुमान्‌जीको दूसरी ओर स्थापित करे। यदि इन अष्ट परिकरोंकी मूर्तियाँ या चित्र न मिलें तो उन्हें भावनाद्वारा स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार इन सबको स्थापित करके श्रीरामनवमी-व्रतके दिन श्रीसीताराम-पूजनका प्रारम्भ करे। पूजन-आरम्भके पूर्व संकल्प करना आवश्यक है। हाथमें जल, अक्षत और फूल लेकर निम्नाङ्कित संकल्प करे—

ॐ तत्सदद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे कलियुगे प्रथमचरणे (अमुक) संवत्सरे (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) नामाहं मम सकलपापक्षय-कामः सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीसीतारामप्रीत्यर्थं च श्रीराम-नवमीव्रतं करिष्ये। तदङ्गत्वेन परिकरसहितं श्रीसीताराम-पूजनं च करिष्ये।

फिर फल, पुष्प, अक्षत, जलसे भरे पात्रको हाथमें लेकर कहे—

उपोष्य नवमीं त्वद्य यामेष्वष्टसु राघव।
[illegible] भवार्णवात्॥
[illegible]ः संसाराद् त्राहि मां हरे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हे राघव ! आज इस नवमीको मैं आठ पहरका उपवास करूँगा । उससे आप परम प्रसन्न हो जाइये । हे हरे ! संसारसे मेरी रक्षा कीजिये ।' यों कहकर पात्रके फल-पुष्प-अक्षतसहित जलको छोड़ दे ।

फिर श्रीगणेश-गौरीका संक्षिप्त पूजन करके तथा कलशकी स्थापना करके साधक मण्डपमें स्थापित मूर्ति (अथवा चित्र) के कपोल-भागका स्पर्श करता हुआ श्रीराममन्त्र (ॐ परिकर-सहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय नमः)का उच्चारण करे, जिससे मूर्तिमें प्राण-प्रतिष्ठा हो जाय । तदुपरान्त भगवान् श्रीरामचतुष्टयका यों ध्यान करना चाहिये—

वामे भागे जनकतनया राजते यस्य नित्यं
भ्रातृप्रेमप्रवणहृदयो लक्ष्मणो दक्षिणे च ।
पादाम्भोजे पवनतनयः श्रीमुखे बद्धनेत्रः
साक्षाद् ब्रह्म प्रणतवरदं रामचन्द्रं भजे तम् ॥

'जिनके वाम भागमें श्रीजानकीजी नित्य विराजित हैं, दायें भागमें भ्रातृ-प्रेमसे सने हुए हृदयवाले श्रीलक्ष्मणजी सुशोभित हैं और जिनके चरणकमलोंके पास पवनपुत्र श्रीहनुमान्‌जी श्रीमुखकी ओर एकटक दृष्टि लगाये बैठे हैं, उन मूर्तिमान् ब्रह्म भक्तवरदायक रघुनायक श्रीरामचन्द्रकी मैं शरण ग्रहण करता हूँ ।'

(१) आवाहन-स्थापन-सांनिध्य—

आवाहयामि विश्वेशं जानकीवल्लभं प्रभुम् ।
कौसल्यातनयं विष्णुं श्रीरामं प्रकृतेः परम् ॥
श्रीरामागच्छ भगवन् रघुवीर नृपोत्तम ।
जानक्या सह राजेन्द्र सुस्थिरो भव सर्वदा ॥
रामभद्र महेष्वास रावणान्तक राघव ।
यावत्पूजां करोम्यद्य तावत्त्वं संनिधौ भव ॥
रघुनायक राजर्षे नमो राजीवलोचन ।
रघुनन्दन मे देव श्रीरामाभिमुखो भव ॥
ॐ परिकरसहितं श्रीसीतारामचन्द्रमावाहयामि स्थापयामि च ।

'जो साक्षात् विष्णु हैं, प्रकृतिसे परे हैं, विश्वके स्वामी हैं, श्रीजनकसुताके परमप्रिय हैं और श्रीकौसल्याम्बाके पुत्र हैं, उन प्रभु श्रीरामजीका मैं आवाहन करता हूँ । हे राजेन्द्र श्रीराम ! हे नृपश्रेष्ठ श्रीरघुवीर ! हे भगवन् ! आप श्रीजानकीजीके साथ पधारें एवं यहाँ सर्वदा वास करें । हे विशाल धनुषधारी श्रीरामभद्र ! हे रावणारि श्रीराघव ! जबतक मेरे-द्वारा पूजा हो रही है, तबतक आप अपना सांनिध्य प्रदान करें । हे कमलनयन राजर्षि रघुकुलनायक ! आपको नमस्कार है । हे मेरे आराध्य रघुनन्दन श्रीराम ! आप मेरे सम्मुख होनेकी कृपा करें ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर यह भावना करे कि 'मैं मण्डपके मध्य परिकरसहित भगवान् श्रीसीतारामजीका आवाहन करके उन्हें स्थापित कर रहा हूँ ।'

(२) आसन—

राजाधिराज राजेन्द्र रामचन्द्र महीपते ।
रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ॥
ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय इदमासनं समर्पयामि ।

'हे राजाधिराज राजेन्द्र ! हे पृथ्वीपते श्रीरामचन्द्र ! मैं आपको रत्नसिंहासन प्रदान करता हूँ । हे प्रभो ! आप इसे स्वीकार करें ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर आसनके निमित्त पुष्प अर्पित करते हुए यह भावना करे कि मण्डपके मध्यमें भगवान् सीतारामजी रत्नसिंहासनपर तथा उनके सभी परिकर अपने-अपने आसनपर विराजित हो रहे हैं ।

(३) पाद्य—

त्रैलोक्यपावनानन्त नमस्ते रघुनायक ।
पाद्यं गृहाण राजर्षे नमो राजीवलोचन ॥
ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय पाद्यं समर्पयामि ।

'तीनों लोकोंको पवित्र करनेवाले अनन्त रघुनायक ! आपको नमस्कार है । हे राजर्षे ! हे कमलनयन ! आपको पुनः नमस्कार है । आप यह पाद्य ग्रहण करें ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर जल अर्पित करते हुए यह भावना करे कि रत्नसिंहासनपर आसीन भगवान् श्रीसीतारामजीके श्रीचरणोंको एवं तदनन्तर उनके परिकरोंके चरणोंको भी मैं सुगन्धित जलसे धो रहा हूँ ।

(४) अर्घ्य—

सभीको अलग-अलग अर्घ्य प्रदान करनेका विधान है, अतः जिस-जिस मन्त्रसे जिन-जिनको अर्घ्य दिया जाना चाहिये—इसका विवरण दिया जा रहा है । जिस प्रकार भगवान् श्रीरामके लिये अर्घ्य प्रदान किया जाय, उसी प्रकार अन्योंको भी प्रदान करना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) भगवान् श्रीरामके लिये—

दशग्रीवविनाशाय जातोऽसि रघुनन्दन ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसीद परमेश्वर ॥
ॐ श्रीरामचन्द्राय अर्घ्यं समर्पयामि ।

'हे रघुनन्दन ! दशकण्ठ रावणका विनाश करनेके लिये ही आपका प्रादुर्भाव हुआ है । हे परमेश्वर ! आप मुझपर प्रसन्न हों तथा मेरेद्वारा प्रदत्त अर्घ्यको स्वीकार करें ।'

शङ्ख या किसी पात्रमें फल-पुष्प-तुलसीसहित जल लेकर उपर्युक्त श्लोकका पाठ करते हुए श्रीरामजीको अर्घ्य देना चाहिये ।

(ख) भगवती सीताके प्रति—

दशग्रीवविनाशाय जाता सावनिसम्भवा ।
मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता ॥
ॐ श्रीसीतादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।

'जो पृथ्वीसे प्रकट हुई हैं, रावणका विनाश ही जिनके प्राकट्यका हेतु है, वे पतिपरायणा शीलसम्पन्ना मिथिलेश-नन्दिनी सीता हमलोगोंकी रक्षा करें ।'

(ग) श्रीलक्ष्मणजीके प्रति—

निहतो रावणिर्येन शत्रुजिच्छत्रुघातिना ।
स पातु लक्ष्मणो धन्वी सुमित्रानन्दवर्द्धनः ॥
ॐ श्रीलक्ष्मणाय अर्घ्यं समर्पयामि ।

'जिन्होंने शत्रुओंको मारकर उनपर विजय प्राप्त की है, जिनके द्वारा रावणपुत्र मेघनादका वध हुआ, सुमित्राके आनन्द-को बढ़ानेवाले वे धनुर्धारी श्रीलक्ष्मणजी रक्षा करें ।'

(घ) श्रीदशरथजीके प्रति—

नानाविधगुणागार गृहाणार्घ्यं नृपोत्तम ।
रविवंशप्रदीपाय दशरथाय ते नमः ॥
ॐ श्रीदशरथाय अर्घ्यं समर्पयामि ।

'रघुकुलदीपक श्रीदशरथजीको नमस्कार है । हे नाना गुणोंके सदन नृपश्रेष्ठ ! आप इस अर्घ्यको स्वीकार करें ।'

(ङ) श्रीकौसल्याम्बाके प्रति—

गृहाणार्घ्यं महादेवि रम्ये दशरथप्रिये ।
जगदानन्दवन्द्यायै कौसल्यायै नमो नमः ॥
ॐ श्रीकौसल्यादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।

'जगत्के आनन्द देनेवाले भगवान् श्रीरामके द्वा वन्दनीय माँ कौसल्याको बारंबार प्रणाम है । हे दशरथप्रि सुन्दरी महादेवि ! आप इस अर्घ्यको ग्रहण करें ।'

(च) श्रीकैकेयी अम्बाके प्रति—

दृढप्रतिज्ञे कैकेयि मातर्भरतवन्दिते ।
गृहाणार्घ्यं महादेवि रक्ष मां भक्तवत्सले ॥
ॐ श्रीकैकेयीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।

'श्रीभरतजीद्वारा वन्दनीय, दृढ़प्रतिज्ञावाली, भक्तवत्सल, महादेवी माँ कैकेयि ! आप इस अर्घ्यको ग्रहण करें एवं मेरी रक्षा करें ।'

(छ) श्रीसुमित्राम्बाके प्रति—

शुभलक्षणसम्पन्ने लक्ष्मणानन्दवर्द्धिनि ।
सुमित्रं देहि मे देवि सुमित्रायै नमो नमः ॥
ॐ श्रीसुमित्रादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।

'शुभ लक्षणोंसे सम्पन्न तथा श्रीलक्ष्मणजीके आनन्दको बढ़ानेवाली देवि ! आप मुझे अच्छे मित्र प्रदान करें; आपको बारंबार नमस्कार है ।'

(ज) श्रीभरतजीके प्रति—

भक्तवत्सल भव्यात्मन् रामभक्तिपरायण ।
भक्त्या दत्तं गृहाणार्घ्यं भरताय नमो नमः ॥
ॐ श्रीभरताय अर्घ्यं समर्पयामि ।

'हे भक्तवत्सल, पवित्रात्मा, रामभक्तिपरायण श्रीभरतजी ! आप भक्तिपूर्वक दिये हुए इस अर्घ्यको स्वीकार करें, आपके लिये बारंबार नमस्कार है ।'

(झ) श्रीशत्रुघ्नजीके प्रति—

लवणान्तक शत्रुघ्न शत्रुकाननपावक ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसीद कुरु मे शुभम् ॥
ॐ श्रीशत्रुघ्नाय अर्घ्यं समर्पयामि ।

'हे लवणासुरको मारनेवाले तथा शत्रुवनके लिये अग्नि-स्वरूप शत्रुघ्नजी ! आप मेरेद्वारा प्रदत्त इस अर्घ्यको स्वीकार करें, मुझपर प्रसन्न हों तथा मेरा मङ्गल करें ।'

(ञ) श्रीसुग्रीवजीके प्रति—

सुग्रीवाय नमस्तुभ्यं दशग्रीवान्तकप्रिय ।
गृहाणार्घ्यं महाबाहो किष्किन्धानायक प्रभो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Siddhanta eGangotri

ॐ श्रीसुग्रीवाय अर्घ्यं समर्पयामि ।

'रावणको मारनेवाले श्रीरामके प्रिय सखा, विशाल भुजावाले, किष्किन्धाके स्वामी सुग्रीवजी ! आप इस अर्घ्यको स्वीकार करें । प्रभो ! आपके लिये प्रणाम है ।'

(ट) श्रीहनुमान्‌जीके प्रति—

कूर्मकुम्भीरसंकीर्णमुत्तीर्णोऽसि महार्णवम् ।
हनूमते नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यं महामते ॥

ॐ श्रीहनुमते अर्घ्यं समर्पयामि ।

'कछुए, मगर आदिसे परिव्याप्त महासमुद्रको लाँघनेवाले, महाबुद्धिशाली श्रीहनुमान्‌जी ! आपके लिये नमस्कार है । आप इस अर्घ्यको स्वीकार करें ।'

(५) आचमन—

नमः सत्याय शुद्धाय नित्याय ज्ञानरूपिणे ।
गृहाणाचमनं नाथ सर्वलोकैकनायक ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय आचमनीयं समर्पयामि ।

'नाथ ! आप नित्य-शुद्ध-सत्य हैं, ज्ञानस्वरूप हैं और सभी लोकोंके एकमात्र नायक हैं । आप कृपापूर्वक आचमन स्वीकार करें ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर सुगन्धित जल अर्पित करते हुए यह भावना करे कि मेरे द्वारा परिकरसहित श्रीसीतारामजीको आचमन कराया जा रहा है ।

(६) स्नान—

नमः श्रीवासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे ।
मधुपर्कं गृहाणेदं जानकीपतये नमः ॥
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा चेति तद्भक्त्या दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥
ब्रह्माण्डोदरमध्यस्थतीर्थैश्च रघुनन्दन ।
स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या त्वं प्रसीद जनार्दन ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय मधुपर्कपञ्चामृते दत्त्वा स्नानार्थं जलं समर्पयामि ।

'तत्त्वज्ञानस्वरूप श्रीवासुदेव भगवान्‌को नमस्कार है । जानकीपति श्रीरामचन्द्रजीको नमस्कार है । आप दधि-मधु-घृतरूप इस मधुपर्कको स्वीकार करें । दूध, दही, घी, मधु और चीनीसे निर्मित यह पञ्चामृत आपके (स्नानके) लिये मैं भक्तिपूर्वक लाया हूँ; आप इसे स्वीकार करें । हे रघुनन्दन ! ब्रह्माण्डके सभी तीर्थोंसे लाये गये पवित्र जलसे मैं आपको भक्तिपूर्वक स्नान करा रहा हूँ । जनार्दन ! आप मुझपर प्रसन्न हों ।'

उपर्युक्त श्लोकोंसे परिकरसहित भगवान् श्रीसीता-रामजीको मधुपर्क तथा पञ्चामृत अर्पण करनेके बाद शुद्ध जलसे स्नान कराना चाहिये ।

(७) वस्त्र—

तप्तकाञ्चनसंकाशं पीताम्बरमिदं हरे ।
त्वं गृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय वस्त्राणि समर्पयामि ।

'हे हरे ! तपे हुए सोनेके समान वर्णवाला यह पीताम्बर है । हे जगन्नाथ ! आप इसे स्वीकार करें । हे श्रीरामचन्द्र ! आपको प्रणाम है ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीता-रामको वस्त्राभूषण समर्पित करने चाहिये ।

(८) यज्ञोपवीत—

श्रीरामाच्युत यज्ञेश श्रीधरानन्त राघव ।
ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण रघुनन्दन ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

'हे श्रीराम ! हे अच्युत ! हे यज्ञेश (यज्ञफलदाता) ! हे श्रीधर ! हे अनन्त ! हे राघव ! हे रघुनन्दन ! आप उत्तरीय-सहित यह यज्ञोपवीत धारण कीजिये ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीताराम-को उत्तरीय (ओढ़नेकी चादर) के साथ यज्ञोपवीत समर्पित करना चाहिये ।

(९) गन्ध—

कुङ्कुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा ।
तुभ्यं दास्यामि राजेन्द्र श्रीराम स्वीकुरु प्रभो ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय गन्धं समर्पयामि ।

'हे राजेन्द्र श्रीराम ! केसर, अगर, कस्तूरी और कपूरसे मिला हुआ चन्दन आपको समर्पित करता हूँ । हे प्रभो ! आप इसे स्वीकार करें ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीता-रामको कुङ्कुमादियुक्त चन्दन चढ़ाना चाहिये ।

(१०) पुष्प—

तुलसीकुन्दमन्दारजातीपुंनागचम्पकैः ।
कदम्बकरवीरैश्च कुसुमैः शतपत्रकैः ॥
नीलाम्बुजैर्बिल्वपत्रैः पुष्पमाल्यैश्च राघव ।
पूजयिष्याम्यहं भक्त्या गृहाण त्वं जनार्दन ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि ।

'तुलसी, कुन्द, मन्दार, मालती, पुंनाग, चम्पा, कदम्ब, करवीर, शतपत्र, नीलकमल आदि पुष्पोंसे, विल्वपत्रोंसे तथा पुष्पमालाओंसे, हे राघव ! मैं भक्तिपूर्वक आपका पूजन करता हूँ; हे जनार्दन ! आप इसे स्वीकार करें ।'

उपर्युक्त मन्त्र पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीता-रामचन्द्रजीको नाना प्रकारके पुष्प और पुष्पमालाएँ अर्पित करनी चाहिये ।

पुष्पमालार्पणके अवसरपर ही भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके विभिन्न अङ्गोंकी पूजा होती है । आगे मन्त्र लिखे जा रहे हैं । क्रमशः मन्त्र बोलकर मन्त्रके सामने जिन अङ्गोंके नाम लिखे हैं, उन-उन अङ्गोंपर पुष्प या अक्षत चढ़ाने चाहिये ।

ॐ श्रीरामचन्द्राय नमः, पादौ पूजयामि । (चरणोंपर)
ॐ श्रीराजीवलोचनाय नमः, गुल्फौ पूजयामि । (टखनोंपर)
ॐ श्रीरावणान्तकाय नमः, जानुनी पूजयामि । (घुटनोंपर)
ॐ श्रीवाचस्पतये नमः, ऊरू पूजयामि । (जाँघोंपर)
ॐ श्रीविश्वरूपाय नमः, जङ्घे पूजयामि । (पिंडलियोंपर)
ॐ श्रीलक्ष्मणाग्रजाय नमः, कटिं पूजयामि । (कमरपर)
ॐ श्रीविश्वामित्रप्रियाय नमः, नाभिं पूजयामि । (नाभिपर)
ॐ श्रीपरमात्मने नमः, हृदयं पूजयामि । (हृदयपर)
ॐ श्रीकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि । (कण्ठपर)
ॐ श्रीसर्वास्त्रधारिणे नमः, बाहू पूजयामि । (भुजाओंपर)
ॐ श्रीरघूद्वहाय नमः, मुखं पूजयामि । (मुखपर)
ॐ श्रीपद्मनाभाय नमः, जिह्वां पूजयामि । (जिह्वापर)
ॐ श्रीदामोदराय नमः, दन्तान् पूजयामि । (दाँतोंपर)
ॐ श्रीसीतापतये नमः, ललाटं पूजयामि । (ललाटपर)
ॐ श्रीज्ञानगम्याय नमः, शिरः पूजयामि । (सिरपर)
ॐ श्रीसर्वात्मने नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि । (सारे अङ्गोंपर)

(११) धूप—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
रामचन्द्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय धूपमाघ्रापयामि ।

'हे पृथ्वीका पालन करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी ! वनस्पतियोंके रसोंसे और उत्तम गन्धयुक्त द्रव्योंसे बने हुए इस धूपको स्वीकार करें ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीता-रामजीको धूप समर्पित करना चाहिये ।

(१२) दीपक—

ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामाय वेधसे ।
गृहाण दीपकं चैव त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय दीपं दर्शयामि ।

'हे श्रीराम ! आप सभी ज्योतियोंके स्वामी हैं—स्रष्टा हैं, तीनों लोकोंके अन्धकारका अपहरण करनेवाले इस दीपकको स्वीकार करें । आपको प्रणाम है ।'

उपर्युक्त श्लोकको पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीतारामचन्द्रजीको प्रज्वलित दीपक दिखलाना चाहिये ।

(१३) नैवेद्य—

इदं दिव्यान्नममृतं रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
रामचन्द्रेश नैवेद्यं सीतेश प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय नैवेद्यं समर्पयामि ।

'हे सीतापते भगवान् श्रीरामचन्द्र ! दिव्य अन्नोंसे निर्मित एवं छहों रसोंसे युक्त इस अमृतमय नैवेद्यको आप स्वीकार करें ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर परिकरसहित श्रीसीतारामको नैवेद्य समर्पित करना चाहिये । तदुपरान्त भगवान् श्रीसीतारामके आचमनके लिये शुद्ध जल समर्पित करना चाहिये ।

(१४) ताम्बूल—

नागवल्लीदलैर्युक्तं पूगीफलसमन्वितम् ।
ताम्बूलं गृह्यतां राम कर्पूरादिसमन्वितम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय ताम्बूलं समर्पयामि ।

'हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप सुपारी और कपूर आदिसे युक्त नागवेलके पत्तोंका बना हुआ बीड़ा स्वीकार कीजिये ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर परिकरसहित भगवान् श्रीसीताराम-को शुद्ध रीतिसे लगाया हुआ पान अर्पित करना चाहिये ।

(१५) आरती—

मङ्गलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे ।
संगृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि ।

'हे पृथ्वीपालक भगवान् श्रीरामचन्द्र ! आपके सर्वविध मङ्गलके लिये यह आरती है । हे जगन्नाथ ! इसे आप स्वीकार करें । आपको प्रणाम है ।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर किसी शुद्ध पात्रमें कपूर तथा (एक या पाँच या ग्यारह) घीकी बत्ती जलाकर परिकरसहित भगवान् श्रीसीतारामजीकी आरती उतारनी चाहिये और समवेतस्वरमें निम्नलिखित आरतीका गायन करना चाहिये—

आरति कीजै श्रीरघुबरकी,
सत चित आनँद शिव सुंदरकी ॥ टेक ॥

दशरथ तनय कौशिला-नन्दन,
सुर मुनि रक्षक दैत्य-निकन्दन,
अनुगत भक्त भक्त-उर-चन्दन,
मर्यादा-पुरुषोत्तम वरकी ॥

निर्गुण सगुण अरूप रूपनिधि,
सकल लोक वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर-वरकी ॥

जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक, त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति,
एकमात्र गति सचराचरकी ॥

शरणागत वत्सल व्रतधारी,
भक्त कल्पतरु वर असुरारी,
नाम लेत जग पावनकारी,
वानर-सखा दीन-दुख-हरकी ॥

(१६) पुष्पाञ्जलि, प्रदक्षिणा, प्रणाम—

नमो देवाधिदेवाय रघुनाथाय शार्ङ्गिणे ।
चिन्मयानन्तरूपाय सीतायाः पतये नमः ॥

ॐ परिकरसहिताय श्रीसीतारामचन्द्राय पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

'देवोंके देव, शार्ङ्गधनुषधर, चिन्मय, अनन्त रूप धारण करनेवाले, सीतापति भगवान् श्रीरघुनाथजीको बारंबार प्रणाम है ।'

अञ्जलिमें पुष्प लेकर उपर्युक्त श्लोक पढ़ना चाहिये । श्लोक-पाठ हो जानेपर पुष्पार्पण करके निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए प्रदक्षिणा करनी चाहिये—

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

'ब्रह्महत्यादि जितने भी पाप हैं, वे सभी प्रदक्षिणाके पद-पदपर निःशेष हो जाते हैं ।'

प्रदक्षिणा करके भगवान् श्रीसीतारामको प्रणाम करना चाहिये एवं उनकी प्रसन्नता-प्राप्तिके लिये कातर-याचना करनी चाहिये !

मुमुक्षुजनको चाहिये कि आत्मकल्याणके लिये सदा रामनवमीका व्रत करें । श्रीरामनवमी-व्रत करनेवाला सभी पापोंसे मुक्त होकर सनातन ब्रह्म भगवान् श्रीसीतारामजीको प्राप्त कर लेता है ।

श्रीरामनवमीके दिन भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके प्रतिमा-दानका अत्यधिक माहात्म्य श्रीअगस्त्य-संहितामें कहा गया है । प्रतिमा स्वर्ण या पाषाण या काष्ठकी हो सकती है । स्वर्ण-पत्रपर भगवान् श्रीसीतारामजीका चित्र या रेखाचित्र अङ्कित करके भी उस चित्र-पत्रका दान किया जा सकता है । प्रतिमा-दानकी विधि विस्तारसे 'व्रतराज' ग्रन्थमें लिखी है, जो वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बईसे प्रकाशित है । विस्तृत विधि जाननेकी जिसे चाह हो, उसे 'व्रतराज' ग्रन्थ देखना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीसीतानवमी-व्रत एवं पूजन-विधि

(लेखक—प० श्रीरामव्यासजी पाण्डेय, एम्०, ए०, शास्त्री)

हिंदू-समाजमें जिस प्रकार श्रीरामनवमीका माहात्म्य है, उसी प्रकार जानकीनवमीका भी है । जिस प्रकार अष्टमी तिथि भगवती राधा तथा भगवान् श्रीकृष्णके आविर्भावसे सम्बद्ध है, उसी प्रकार नवमी तिथि भगवती सीता तथा भगवान् श्रीरामके आविर्भावकी तिथि होनेसे परमादरणीया है । भगवती राधाका आविर्भाव भाद्र शुक्ल अष्टमीको और भगवान् श्रीकृष्णका आविर्भाव भाद्र कृष्ण अष्टमीको अर्थात् दो विभिन्न अष्टमी तिथियोंमें हुआ । उसी प्रकार भगवती सीताका आविर्भाव वैशाख शुक्ल नवमीको और भगवान् रामका आविर्भाव चैत्र शुक्ल नवमीको अर्थात् दो विभिन्न नवमी तिथियोंमें हुआ । हिंदूमात्रके परमाराध्य श्रीसीताराम तथा श्रीराधाकृष्णसे सम्बद्ध आविर्भावके ये चारों दिवस अति पावन एवं महत्त्वपूर्ण हैं । इन आविर्भाव-दिवसोंपर संयमपूर्वक व्रत करनेवालेको भुक्ति-मुक्तिकी सहज ही प्राप्ति होती है । श्रीजानकीनवमीके पावन पर्वपर जो व्रत रखता है तथा भगवान् श्रीरामचन्द्रजी-सहित भगवती श्रीसीताका अपनी शक्तिके अनुसार भक्ति-भावपूर्वक विधि-विधानसे सोत्साह पूजन-वन्दन करता है, उसे पृथ्वी-दानका फल, महाषोडश-दानका फल, अखिलतीर्थ-भ्रमणका फल और सर्व-भूत-दयाका फल अनायास ही मिल जाता है । भगवती सीताकी प्रसन्नता समस्त मङ्गलोंका मूल है । अतः श्रीसीतानवमी-व्रत आत्मकल्याणार्थीके लिये सर्वथा आचरणीय है

वैशाखमासकी शुक्ल नवमीको, जब कि पुष्य नक्षत्र था, मङ्गलवारके दिन, संतान-प्राप्तिकी कामनासे यज्ञकी भूमि तैयार करनेके लिये राजा जनक हलसे भूमि जोत रहे थे, उसी समय पृथ्वीसे उक्त देवीका प्राकट्य हुआ। जोती हुई भूमिको तथा हलकी नोकको भी 'सीता' कहते हैं । अतः प्रादुर्भूता भगवती विश्वमें सीताके नामसे विख्यात हुईं । इसी नवमीकी पावन तिथिको भगवती सीताका प्राकट्योत्सव मनाया जाता है ।

अष्टमी तिथिको ही नित्यकर्मोंसे निवृत्त होकर शुद्ध भूमिपर सुन्दर मण्डप बनाये, जो तोरणादिसे समलंकृत हो । मण्डपके मध्यमें सुन्दर चौकोर वेदिकापर परिकरोंसहित भगवती सीता एवं भगवान् श्रीरामकी स्थापना करनी चाहिये । पूजनके लिये स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, काठ एवं मिट्टी—इनमेंसे यथासामर्थ्य किसी एक वस्तुसे बनी हुई प्रतिमाकी स्थापना की जा सकती है । मूर्तिके अभावमें चित्रपटसे भी काम लिया जा सकता है । जो भक्त मानसिक पूजा करते हैं, उनकी तो पूजन-सामग्री एवं आराध्य—सभी भावमय ही होते हैं ।

भगवती सीता एवं भगवान् श्रीरामकी प्रतिमाके साथ-साथ पूजनके लिये राजा जनक, माता सुनयना, कुलपुरोहित शतानन्दजी, हल और माता पृथ्वीकी भी प्रतिमाएँ स्थापित करनी चाहिये ।

नवमीके दिन नित्यकर्मसे निवृत्त होकर श्रीजानकी-रामके पूजनके लिये साधकको निम्नलिखित रूपसे संकल्प करना चाहिये—

ॐ तत्सदद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराह-कल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे कलियुगे प्रथमचरणे (अमुक) संवत्सरे (वैशाख) मासे (शुक्ल) पक्षे (नवमी) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) नामाहं मम सकलपापक्षयकामः सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीसीतारामप्रीत्यर्थं च श्रीसीतानवमीव्रतं करिष्ये, तदङ्गत्वेन परिकरसहित-श्रीजानकीरामपूजनं च करिष्ये ।

संकल्पके बाद पञ्चोपचार (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य) से श्रीगणेशजी और भगवती पार्वतीका पूजन करना चाहिये । फिर मण्डपके पास ही अष्टदल कमलपर विधिपूर्वक कलशकी स्थापना करनी चाहिये । यदि मण्डपमें प्राणप्रतिष्ठित विग्रह न हो तो मण्डपमें प्रस्थापित प्रतिमा या चित्रमें प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिये । एतदर्थ उपासकको प्रतिमाके कपोलोंका स्पर्श करना चाहिये तथा—**ॐ परिकरसहितश्रीजानकीरामाभ्यां नमः**' इस मन्त्रका उच्चारण करना चाहिये ।

मूलमन्त्र (श्रीं सीतायै नमः) से प्राणायाम करके फिर विनियोग करे ।

विनियोग—**ॐ अस्य श्रीसीताया मूलमन्त्रस्य जनक ऋषिः, गायत्री छन्दः, सीता देवता, श्रीं बीजम्, नमः शक्तिः, सीतापूजने विनियोगः ।**

तदुपरान्त न्यास करना चाहिये—

(क)—**ऋष्यादिन्यास**—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) शिरसि जनकवर्यये नमः । (इसे पढ़कर दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे सिरका स्पर्श करे ।)

(२) मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः । (इसे पढ़कर दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे मुखका स्पर्श करे तथा हाथ धो ले ।)

(३) हृदि सीतादेवतायै नमः । (इसे पढ़कर दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे ।)

(४) नाभौ श्रींबीजाय नमः । (इसे पढ़कर दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे नाभिका स्पर्श करे ।)

(५) पादयोः शक्त्यै नमः । (इसे पढ़कर दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे पैरोंका स्पर्श करे ।)

(ख)—करन्यास—

(१) श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । (दोनों हाथोंकी तर्जनी अँगुलियोंसे दोनों अँगूठोंका स्पर्श करे ।)

(२) श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । (दोनों अँगूठोंसे दोनों तर्जनी अँगुलियोंका स्पर्श करे ।)

(३) श्रूं मध्यमाभ्यां वषट् । (दोनों अँगूठोंसे दोनों मध्यमा अँगुलियोंका स्पर्श करे ।)

(४) श्रैं अनामिकाभ्यां हुम् । (दोनों अँगूठोंसे दोनों अनामिका अँगुलियोंका स्पर्श करे ।)

(५) श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । (दोनों अँगूठोंसे दोनों कनिष्ठिका अँगुलियोंका स्पर्श करे ।)

(६) श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (दोनों हाथोंकी हथेलियों एवं उनके पृष्ठभागोंका परस्पर स्पर्श करे ।)

(ग)—अङ्गन्यास—

(१) श्रां हृदयाय नमः । (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे हृदयका स्पर्श)

(२) श्रीं शिरसे स्वाहा । (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे सिरका स्पर्श)

(३) श्रूं शिखायै वषट् । (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे शिखाका स्पर्श)

(४) श्रैं कवचाय हुम् । (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे बायें कंधेका स्पर्श, बायें हाथकी अँगुलियोंसे दाहिने कंधेका स्पर्श)

(५) श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । (दाहिने हाथकी अँगुलियोंके अग्रभागसे दोनों नेत्रों एवं ललाटके मध्यभागका स्पर्श)

(६) श्रः अस्त्राय फट् । (इसे पढ़कर दाहिने हाथको सिरके दायीं ओरसे आगेकी ओर ले जाकर दाहिनी ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियोंसे बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजा दे ।)

ध्यान—हाथमें पुष्प लेकर भगवती सीताका निम्नलिखित श्लोकके अनुसार ध्यान करना चाहिये—

ॐ ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागां
चूडामणिप्रभृतिमण्डनमण्डिताङ्गीम् ।
कौशेयवस्त्रमणिमौक्तिकहारयुक्तां
ध्यायेद् विदेहतनयां शशिगौरवर्णाम् ॥

'मण्डलाकार कर्णाभूषणोंसे जिनके कपोल अति सुन्दर लग रहे हैं, चूड़ामणि आदि अनेकविध आभूषणोंसे जिनके विभिन्न अङ्ग अलंकृत हैं, जो रेशमी वस्त्र तथा मणि एवं मोतीके हारोंसे विभूषित हैं और जिनका चन्द्रमाके समान गौरवर्ण है, उन जनकात्मजा भगवती सीताका ध्यान करना चाहिये ।'

(१) आवाहन—श्रीजानकी-रामका आवाहन—

आवाहयाम्यहं सीते सर्वकामार्थसिद्धये ।
अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥
ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, श्रीजानकीरामौ आवाहयामि ।

'भगवती सीते ! सब कामनाओंकी सिद्धिके लिये मैं आपका आवाहन करता हूँ । मुझपर कृपा करके इस विग्रहमें आकर निवास कीजिये ।'

(२) आसन—

नानाप्रभाभिराकीर्णं नानावर्णविभूषितम् ।
आसनं कल्पितं देवि प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि ।

'देवि सीते ! नाना प्रकारकी कान्तियोंसे युक्त तथा विविध रंगोंसे सुशोभित यह आसन आपकी प्रसन्नताके लिये तैयार किया गया है । आप इसपर विराजें ।'

(३) पाद्य—

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम् ।
पाद्यं तेऽहं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

'परमेश्वरि ! गङ्गा आदि सभी तीर्थोंसे लाये हुए उत्तम जलको मैं आपके पाद-प्रक्षालनके लिये अर्पित करता हूँ । आप इसे स्वीकार करें ।'

(४) अर्घ्य-

उत्पन्नासि महाभागे स्वर्णलाङ्गलपद्धतौ ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया मिथिलेशजे ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ।

'महाभाग्यवती जनकनन्दिनि ! स्वर्णके हलसे पृथ्वीको जोतते समय आपका प्रादुर्भाव हुआ था । मेरेद्वारा अर्पित अर्घ्यको कृपया स्वीकार करें ।'

(५) आचमन--

कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम् ।
आचम्यतां महामाये मया दत्तं हि भक्तितः ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

'महामाये ! मन्दाकिनी (स्वर्गस्थित गङ्गा) से लाया हुआ तथा कपूरसे सुवासित जल भक्तिपूर्वक मेरेद्वारा अर्पित है । आप उसका आचमन करें ।'

(६) पञ्चामृतस्नान एवं शुद्ध स्नान-

पयो दधि घृतं चैव मधु शर्करयान्वितम् ।
पञ्चामृतेन स्नपनं गृहाण परमेश्वरि ॥
ज्ञानमूर्ते महामाये दिव्यरूपे सुरेश्वरि ।
स्नानं गृहाण देवि त्वं नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं शुद्धोदकस्नानं च समर्पयामि ।

'परमेश्वरि ! दूध, दधि, घृत, मधु और शर्करासे विनिर्मित पञ्चामृत मैं आपको स्नानार्थ अर्पण कर रहा हूँ; कृपया इसे स्वीकार करें । हे ज्ञानमूर्ति महामाये ! हे दिव्यरूपे सुरेश्वरि ! मेरेद्वारा शुद्ध जलसे कराये गये स्नानको भी आप स्वीकार करें । भगवती नारायणि ! आपको नमस्कार है ।'

(७) वस्त्र—

तन्तुसंतानसंयुक्तं कलाकौशलकल्पितम् ।
सर्वाङ्गाभरणं वस्त्रयुगलं परिधीयताम् ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि ।

'देवि ! कलाकौशलपूर्वक सूत्रोंद्वारा निर्मित सभी अङ्गोंके आभरणस्वरूप इन दोनों वस्त्रों (अधोवस्त्र एवं उत्तरीय) को आप धारण करें ।'

(८) अलंकार—

अलंकारान् महादिव्यान् नानारत्नविनिर्मितान् ।
गृहाण वरदे देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, अलंकारान् समर्पयामि ।

'वरदायिनी देवि ! नाना रत्नोंसे बने हुए इन महान् दिव्य अलंकारोंको आप ग्रहण करें । परमेश्वरि ! आप प्रसन्न हों ।'

(९) गन्ध एवं सिन्दूर—

मलयाचलसम्भूतं नानागन्धसमन्वितम् ।
शीतलं बहुलामोदं गृहाण वरदे शुभे ॥
सिन्दूरं सर्वसाध्वीनां भूषणाय विनिर्मितम् ।
गृहाण वरदे देवि भूषणानि प्रयच्छ मे ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, गन्धसिन्दूरे समर्पयामि ।

'मङ्गलविधायिनी एवं वर देनेवाली सीते ! मलयपर्वतपर उत्पन्न हुए तथा केसर, कस्तूरी, कपूर आदि अनेक प्रकारके अन्य गन्धोंसे युक्त, शीतल एवं अत्यधिक सौरभ प्रदान करनेवाले इस चन्दनको आप स्वीकार करें । वरदात्री देवि ! सिन्दूर सभी साध्वी स्त्रियोंके शृङ्गारके लिये बनाया गया है, इसे आप ग्रहण करें एवं (भक्तिभावरूपी) आभूषण मुझे प्रदान करें ।'

(१०) पुष्प एवं पुष्पमाला

सुगन्धीनि सुपुष्पाणि देशकालोद्भवानि च ।
मयाऽऽनीतानि पूजार्थं प्रीत्याऽऽदेहि महेश्वरि ॥
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥
नानापुष्पविचित्राढ्यां पुष्पमालां सुशोभनाम् ।
प्रयच्छामि सदा भद्रे गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, पुष्पतुलसीपुष्पमालाः समर्पयामि ।

'महेश्वरि ! ये देश-कालानुसार उत्पन्न उत्तम सुरभित पुष्प पूजाके लिये मेरेद्वारा लाये गये हैं । इन्हें आप प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करें । सदा मङ्गलकारिणी देवि ! जन्म-मरणसे मुक्ति दिलानेवाली हेमवर्णा हरिप्रिया तुलसी एवं रत्नोपम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी मञ्जरीको मैं आपके लिये समर्पित करता हूँ। परमेश्वरि ! विविध पुष्पोंसे विनिर्मित सुन्दर एवं रंग विरंगी पुष्पमाला भी मैं अर्पित करता हूँ, आप इसे स्वीकार करें।'

(११) धूप—

दशाङ्गं घृतसंयुक्तं कृष्णागुरुसमन्वितम्।
दशाङ्गं धूपमादेहि सीते देवि नमोऽस्तु ते॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

'सीते ! आप घृत और काले रंगके अगरसे युक्त दशाङ्ग धूपको स्वीकार करें। देवि ! आपको प्रणाम है।'

(१२) दीप—

सुप्रकाशो महान् दीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

'देवि ! यह महान् दीपक सुन्दर प्रकाश फैलानेवाला, चारों ओरके अन्धकारका अपहरण करनेवाला और बाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों प्रदेशोंको ज्योतिर्मय बनानेवाला है; इसे आप ग्रहण करें।'

(१३) नैवेद्य—

दिव्यषड्रससंयुक्तं नानाभक्ष्यैश्च संयुतम्।
सोप्यपेयसमायुक्तं वरान्नं प्रतिगृह्यताम्॥
पानीयं शीतलं स्वच्छं कर्पूरादिसुवासितम्।
भोजने तृप्तिकृत्तस्मात् प्रीत्याऽऽदेहि महेश्वरि॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, नैवेद्यं तदुपरि आचमनीयं समर्पयामि।

'देवि ! यह नैवेद्य विविध प्रकारके खाद्यपदार्थोंसे युक्त तथा दिव्य षड्रससे परिपूर्ण है, इसमें चूसनेयोग्य तथा पीनेयोग्य वस्तुओंका सम्मिश्रण है; इसे आप स्वीकार करें। हे महेश्वरि ! कर्पूरादिसे सुवासित, शीतल एवं स्वच्छ जल भोजनमें तृप्ति प्रदान करनेवाला होता है, इसलिये आप प्रसन्न होकर इसे स्वीकार करें।'

(१४) ताम्बूल—

पूगीफलं महद्दिव्य नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीजानकीरामाभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

'देवि ! सुपारी, कपूर, इलायची तथा नागरबेलके पानसे युक्त इस महान् दिव्य ताम्बूलको ग्रहण करें।'

आरती एवं मन्त्रपुष्पाञ्जलिके पूर्व मण्डपमें प्रतिष्ठित अन्य आराध्योंका भी पूजन कर लेना चाहिये।

(क) श्रीजनकजीका पूजन—

देवी पद्मालया साक्षाद्यतीर्णा यदालये।
मिथिलापतये तस्मै जनकाय नमो नमः॥

'जिनके गृहमें साक्षात् लक्ष्मी देवी ही उत्पन्न हुई थीं, उन मिथिलापति श्रीजनकजीके लिये बारंबार नमस्कार है।'

उपर्युक्त मन्त्रसे श्रीजनकजीकी वन्दना करके 'ॐ श्रीजनकाय नमः' मन्त्रसे पञ्चोपचार-पूजन करना चाहिये।

(ख) श्रीसुनयनाम्बाजीका पूजन—

सीताया जननी मातर्महिषी जनकस्य च।
पूजां गृहाण मदत्तां महाबुद्धे नमोऽस्तु ते॥

'अम्बा ! आप श्रीसीताजीकी माता तथा महाराज जनककी पटरानी हैं, मेरेद्वारा की हुई इस पूजाको ग्रहण करें। महामति ! आपको प्रणाम है।'

उपर्युक्त मन्त्रसे श्रीसुनयनाजीकी वन्दना करके 'ॐ श्रीसुनयनाम्बायै नमः' मन्त्रसे पञ्चोपचार-पूजन करना चाहिये।

(ग) श्रीशतानन्दजीका पूजन—

निधानं सर्वविद्यानां विद्वत्कुलविभूषणम्।
जनकस्य पुरोधास्त्वं शतानन्दाय ते नमः॥

'शतानन्दजी ! आप सभी विद्याओंके आगार, विद्वत् शिरोमणि एवं श्रीजनकजीके पुरोहित हैं। आपको नमस्कार है।'

उपर्युक्त मन्त्रसे श्रीशतानन्दजीका वन्दना करके 'ॐ श्रीशतानन्दाय नमः' मन्त्रसे पञ्चोपचार-पूजन करे।

(घ) श्रीहलका पूजन—

जीवयस्यखिलं विश्वं चालयन् वसुधातलम्।
प्रादुर्भावयसे सीतां सीर तुभ्यं नमोऽस्तु ते॥

'हे हल ! पृथ्वीको जोतते समय तुमने सीताको प्रकट किया है एवं सम्पूर्ण विश्वका तुम्हारे द्वारा पोषण होता है; तुम्हें नमस्कार है।'

उपर्युक्त मन्त्रसे श्रीहलकी वन्दना करके 'ॐ श्रीहलाय नमः' मन्त्रसे पञ्चोपचार-पूजन करे।

(ङ) श्रीपृथ्वीदेवीका पूजन—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयैवोत्पादितं सर्वं जगदेतच्चराचरम्।
त्वमेवासि महामाया मुनीनामपि मोहिनी॥
त्वदायत्ता इमे लोकाः श्रीसीतावल्लभा परा।
वन्दनीयासि देवानां सुभगे त्वां नमाम्यहम्॥

'पृथ्वीमातः! यह सम्पूर्ण चराचर जगत् आपसे ही उत्पन्न हुआ है। आप ही मुनियोंको भी मोहित करनेवाली महामाया हैं। ये सभी लोक आपके अधीन हैं। आप पराशक्ति हैं एवं श्रीसीताजी आपको परमप्रिय हैं। आप देवोंके लिये भी वन्दनीया हैं। सुभगे! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।'

उपर्युक्त मन्त्रसे श्रीपृथ्वी देवीकी वन्दना करके 'ॐ श्री-सुभगायै नमः' मन्त्रसे पञ्चोपचार-पूजन करना चाहिये।

(१५) आरती—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदा भव॥

ॐ परिकरसहितश्रीजानकीरामाभ्यां नमः, कर्पूरार्तिक्यं समर्पयामि।

'हे देवि! कदलीके गर्भसे उत्पन्न हुए कपूरको प्रज्वलित करके मैं आपकी आरती कर रहा हूँ। आप इसे देखें तथा मुझे वर प्रदान करें।'

घीकी बत्ती तथा कर्पूरको प्रज्वलित करके नीचे लिखी आरतीको गाते और वाद्य आदि बजाते हुए परिकरसहित श्रीजानकी-रामजीकी सोत्साह भक्तिपूर्वक आरती करनी चाहिये।

आरति श्रीजनक-दुलारीकी।
सीताजी रघुवर-प्यारीकी॥ टेक॥
जगत-जननि जगकी विस्तारिणि,
नित्य सत्य साकेत विहारिणि,
परम दयामयि दीनोद्धारिणि,
मैया भक्तन हितकारीकी॥सीताजी०॥
सती-शिरोमणि पति-हित-कारिणि,
पति-सेवा-हित वन-वन-चारिणि,
पतिहित पति-वियोग-स्वीकारिणि,
त्याग-धर्म-मूरतिधारीकी॥सीताजी०॥
विमल कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत कटत कष्ट दुखदाई,
शरणागत-जन-भय-हारीकी॥सीताजी०॥

(१६) पुष्पाञ्जलि, प्रणाम एवं प्रदक्षिणा—

नानासुगन्धिकुसुमैर्यथाकालसमुद्भवैः च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ परिकरसहितश्रीजानकीरामाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

'हे परमेश्वरि! ऋतुके अनुसार उत्पन्न हुए नाना प्रकारके सुगन्धित पुष्पोंसे युक्त मेरेद्वारा दी जानेवाली इस पुष्पाञ्जलि को स्वीकार करें।'

दशाननविनाशाय धात्रा धरणिसम्भवा।
मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता॥

'जो रावणके विनाशके लिये पृथ्वी माताके गर्भसे उत्पन्न हुई हैं, पतिको ही देवता माननेवाली तथा शीलसम्पन्न हैं, वे मिथिलेशकुमारी हमारी रक्षा करें।'

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर भगवती सीताकी कृपाकी प्राप्ति-हेतु निम्नलिखित 'जानकी-स्तोत्र'का सस्वर पाठ करना चाहिये।

नीलनीरजदलायतेक्षणां लक्ष्मणाग्रजभुजावलम्बिनीम्।
शुद्धिमिद्धदहने प्रदित्सतीं भावये मनसि रामवल्लभाम्॥१॥
रामपादविनिवेशितेक्षणामङ्गकान्तिपरिभूतहाटकाम्।
ताटकारिपरुषोक्तिविक्लवां भावये मनसि रामवल्लभाम्॥२॥
कुन्तलाकुलकपोलमाननं राहुवक्त्रगसुधाकरद्युतिम्।
वाससा पिदधतीं ह्रियाकुलां भावये मनसि रामवल्लभाम्॥३॥
कायवाङ्मनसगं यदि व्यधां स्वप्नजागृतिषु राघवेतरम्।
तद्दहाङ्गमिति पावकं यतीं भावये मनसि रामवल्लभाम्॥४॥
इन्द्रसद्मधनदाम्बुपालकैः सद्विमानगणमास्थितैर्दिवि।
पुष्पवर्षमनुसंस्तुताङ्घ्रिकां भावये मनसि रामवल्लभाम्॥५॥
संचयैर्दिविषदां विमानगैर्विस्मयाकुलमनोभिवीक्षिताम्।
तेजसा पिदधतीं सदा दिशो भावये मनसि रामवल्लभाम्॥६॥

"नील कमल-दलकी पँखुड़ियोंके सदृश जिनके नेत्र हैं, जिन्हें श्रीरामकी भुजाका ही अवलम्बन है, जो प्रज्वलित अग्निमें अपनी पवित्रताकी परीक्षा देना चाहती हैं, उन रामप्रिया सीताकी मैं मन-ही-मनमें भावना (ध्यान) करता हूँ। जिनके नेत्र श्रीरामजीके चरणोंकी ओर निश्चलरूपसे लगे हुए हैं, जिन्होंने अपनी अङ्गकान्तिसे सुवर्णको मात कर दिया है तथा ताटकाके वैरी श्रीरामके कटुवचनोंसे जो घबरायी हुई हैं, उन रामकी प्रेयसी श्रीसीताकी मैं मनमें भावना करता हूँ। जो लज्जासे हतप्रभ हुई अपने उस मुखको—जिसके कपोल उनके बिखरे हुए बालोंसे उसी प्रकार आवृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जैसे चन्द्रमा राहुके द्वारा ग्रसे जानेपर अन्धकारसे आवृत हो जाता है—वस्त्रसे ढक रही हैं, उन राम-पत्नी सीताकी मैं मनमें भावना करता हूँ। जो मन-ही-मन यह कहती हुई कि 'यदि मैंने श्रीरघुनाथके अतिरिक्त किसी औरको अपने शरीर, वाणी अथवा मनमें कभी स्थान दिया हो, तो हे अग्नि! मेरे शरीरको जला दो' अग्निमें प्रवेश कर गयीं, उन रामकी प्राणप्रिया सीताकी मैं मनमें भावना करता हूँ। उत्तम विमानोंमें बैठे हुए इन्द्र, रुद्र, कुबेर और वरुणद्वारा पुष्प-वृष्टिके अनन्तर जिनके चरणोंकी भलीभाँति स्तुति की गयी है, उन श्रीरामकी प्यारी पत्नी सीताकी मैं मनमें भावना करता हूँ। (अग्नि-शुद्धिके समय) विमानोंमें बैठे हुए देवगण विस्मयाविष्ट चित्तसे जिनकी ओर देख रहे थे और जो अपने तेजसे दसों दिशाओंको आच्छादित कर रही थीं, उन रामवल्लभा सीताकी मैं मनमें भावना करता हूँ।"

उपर्युक्त स्तोत्र पढ़कर भगवती सीता एवं अन्य उपास्य देवी-देवताओंकी प्रदक्षिणा करके उन्हें प्रणाम करना चाहिये तथा भक्ति प्रदान करनेके लिये उनसे प्रार्थना करनी चाहिये। तदुपरान्त आगत भक्तोंके मध्य श्रीसीताजीके प्रसादका वितरण करना चाहिये।

जो भक्त रात्रिमें जागते हुए सीताजीके गुणोंकी चर्चामें, लीलाके गायनमें तथा स्वरूपके चिन्तनमें समयका सदुपयोग करते हैं, उन्हें भुक्ति-मुक्तिकी प्राप्ति होती है। दशमीके दिन पारण करके व्रतकी सम्पन्नता करनी चाहिये। जो श्रद्धालु भक्त इस पुण्य-व्रतके अवसरपर भगवान् श्रीसीतारामकी स्वर्ण, रजत या कांस्यकी बनी प्रतिमा अथवा अङ्कित-पत्रका दान करता है, अथवा भूमिदान, गोदान, अन्न-दान आदि करता है, उसे परम पुण्यकी प्राप्ति होती है। दशमीके दिन व्रतकी पूर्णाहुति करके अष्टदलका विसर्जन करना चाहिये।

इस प्रकार व्रतोत्सव करनेवालेपर भगवती सीता सदा प्रसन्न रहती हैं। जिसके घर श्रीसीताजीकी प्रतिमा नित्य पूजी जाती हो, वह उसमें भी श्रीसीताजीकी यह पूजा कर सकता है। यदि श्रीसीताजीका कोई अर्चा-विग्रह न हो तो शालग्राममें ही श्रीसीताजीकी भावनासे पूजा करनी चाहिये। इन्द्रादि देवतागण, गन्धर्व, किंनर—सभी इस प्रकार जानकी-जयन्त्युत्सव मनाया करते हैं। उसके आचरणसे भगवान् राघवेन्द्रकी प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा अश्वमेधादि यज्ञ एवं सम्पूर्ण पृथ्वीकी यात्राका फल मिलता है।

रङ्गभूमिमें श्रीराम-लक्ष्मण

रंगभूमि आए दसरथ के किसोर हैं।
पेखनो सो पेखन चले हैं पुर-नर-नारि, बारे-बूढ़े, अंध-पंगु करत निहोर हैं॥
नील-पीत नीरज, कनक-मरकत, घन-दामिनि-बरन तनु, रूप के निचोर हैं।
सहज सलोने, राम-लषन ललित नाम, जैसे सुने तैसेई कुँवर सिरमौर हैं॥
चरन-सरोज, चारु जंघा, जानु, ऊरु, कटि, कंधर बिसाल, बाहु बड़े बरजोर हैं।
नीकें कै निषंग कसें, कर कमलनि लसैं, बान-बिसिषासन मनोहर-कठोर हैं॥
काननि कनकफूल, उपबीत अनुकूल, पियरे दुकूल बिलसत आछे छोर हैं।
राजिव-नयन, बिधुबदन, टिपारे सिर, नख-सिख अंगनि ठगौरी ठौर-ठौर हैं॥
सभा-सरवर लोक-कोकनद-कोकगन प्रमुदित मन देखि दिनमनि भोर हैं।
अबुध असैले मन-मैले महिपाल भए, कछुक उलूक, कछु कुमुद-चकोर हैं॥
भाई सों कहत बात, कौसिकहि सकुचात, बोल घन-घोर-से बोलत थोर-थोर हैं।
सनमुख सबहि, बिलोकत सबहि नीकें, कृपा सों हेरत हँसि तुलसी की ओर हैं॥

—गोस्वामी तुलसीदासजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar